www.thearyasamaj.org

मांसाहार से हानियाँ

- श्री राजीव दीक्षित
स्वदेशी के प्रखर प्रवक्ता

www.thearyasamaj.org

|| ओ३म् ||

मांसाहार से हानियाँ

राजीव दीक्षित

www.thearyasamaj.org

प्रकाशक

आर्य प्रकाशन
814, कुण्डेवालन, अजमेरी गेट
दिल्ली-110006

पुस्तक प्राप्ति स्थान

अरूण अग्रवाल
D-1/43, प्रथम मंजिल,
जनकपुरी, दिल्ली-110058
मोबाइल : 9891439735

संस्करण : 2011
मूल्य : 25.00

मुद्रक

www.thearyasamaj.org

प्रस्तावना

परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज ने "संपूर्ण आजादी का शंखनाद" नाम से राजीव भाई के जो 20 व्याख्यान CD के रूप से निकाले है। यह उसी में एक **"मांसाहार से हानियाँ"** का लिपिबद्ध रूप है।

इस पुस्तक में लिखा गया एक भी शब्द मेरा नहीं है। मैंने सिर्फ राजीव भाई जी के शब्दों को लिपिबद्ध किया है। राजीव भाई के व्यक्तित्व से मैं अत्यन्त प्रभावित थी व भविष्य में उनके साथ मिलकर (देश और समाज के लिए) काम करना चाहती थी। मेरा स्वप्न तो अब पूरा नहीं हो पायेगा। परन्तु राजीव भाई ने जो स्वप्न देखा था उसको पूरा करने के लिए कुछ प्रयास करना चाहती हूँ। मुझे आशा है कि इस पुस्तक के माध्यम से राजीव भाई के विचार उन लोगों तक पहुँच सकेगें जिन्होंने अभी तक उनके विचार नहीं सुने हैं।

श्रद्धेय राजीव भाई जी का व्याख्यान मैंने 3 साल पहले सुना था, जब श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरूकुल चोटीपुरा (उ०प्र०) की आचार्या **डा0 सुमेधा जी** व **डा0 सुकामा जी** ने राजीव भाई के कैसेट का एक सैट मेरे पिताजी को दिया था।

राजीव भाई ने आज़ादी बचाओ आन्दोलन की शुरूआत की व पूरे देश में घूम-घूम कर लोगों में स्वदेशी और देशभक्ति की भावना जागृत की।

राजीव भाई जी एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनके मुख से निकला एक-एक शब्द अनुसंधान व वैज्ञानिकता से परिपूर्ण होता था। उनको लिपिबद्ध करना अपने आप में एक बहुत ही कठिन कार्य था। इस कार्य को करने के लिए बहुत से लोगों ने अपना सहयोग दिया जिनका नाम लिखे बिना यह प्रस्तावना पूरी नहीं होगी।

www.thearyasamaj.org

इस कार्य में सबसे बड़ा सहयोग व योगदान मेरे **माता-पिता** का है। बिना उनके यह कार्य संभव ही नहीं हो सकता था। उन्होंने ही इसका संपादन किया है। वे मेरी हर बात को पूरा महत्व देते हैं और हर कार्य में बड़ों की तरह नहीं बल्कि मेरे साथियों जैसा सहयोग करते हैं। मेरी छोटी बहन **स्वाति** ने भी इसको लिपिबद्ध करने में अपना सहयोग दिया।

राजीव जी के भाई **प्रदीप जी** से भी फोन पर बात हुई और उन्होंने इतनी सरलता से बात की कि मुझे लगा ही नहीं कि मैं इतने महान व्यक्ति के भाई से बात कर रही हूँ। उन्होंने बड़े प्रेम से मुझे काम जारी रखने को कहा, और इसे पुस्तक का रूप देने की आज्ञा दे दी।

पुस्तक की रूपरेखा बनाने में **डा0 मदन मोहन बजाज** ने अपना अमूल्य सहयोग दिया। **डा0 मदन मोहन बजाज** का नाम राजीव भाई जी ने अपने व्याख्यान में भी लिया है। **डा0 मदन मोहन बजाज** दिल्ली विश्वविद्यालय में भौतिकी विज्ञान के प्रोफेसर रहने के पश्चात अब अनेक वर्षों से गौवंश की रक्षा के लिए अभूतपूर्व कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा भाई **सुनील कुमार** ने इसको टाईप करने में अपना अमूल्य समय व सहयोग किया।

मैं आप सभी लोगों का धन्यवाद करती हूँ व आशा करती हूँ कि भविष्य में भी मुझे ऐसा ही सहयोग मिलेगा।

अनुप्रिया

(अनुप्रिया)

www.thearyasamaj.org

श्री राजीव दीक्षित

श्री राजीव दीक्षित - जीवन परिचय और कार्य

राजीव भाई का जन्म उत्तर प्रदेश के नाह गांव के एक साधारण परिवार में हुआ। इनकी मां एक धार्मिक महिला हैं। वे नित्यप्रति रामायण की चौपाइयों का पाठ किया करती थीं। इन सबका बालक राजीव पर गहरा प्रभाव पड़ा। बालक राजीव मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के जीवन का अनुकरण करते हुए बड़े होने लगे।

उनकी प्रारंम्भिक व माध्यमिक शिक्षा फिरोजाबाज में हुई। उसके बाद 1984 में उच्च शिक्षा के लिए वे इलाहाबाद गए। बचपन से ही भगतसिंह, उधमसिंह और चन्द्रशेखर आज़ाद जैसे महान क्रान्तिकारियों से प्रभावित रहे। बाद में जब उन्होंने गांधी जी को पढ़ा तो उनसे भी बहुत प्रभवित हुए। यही कारण था की वे सैटेलाईट टेलीकम्युनिकेशन में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे परन्तु अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़कर देश को विदेशी कंपनियों की लूट से मुक्त कराने और भारत को स्वदेशी बनाने के आन्दोलन में कूद पड़े।

www.thearyasamaj.org

1987 में सेवाग्राम आश्रम, वर्धा में प्रख्यात गांधीवादी इतिहासकार माननीय श्री धर्मपाल जी के सानिध्य में इतिहास का गहन अध्ययन किया। उन्होंने अंग्रेजों के समय के ऐतिहासिक दस्तावेजों का विशेष रूप से अध्ययन किया व अपने व्याख्यानों में इन दस्तोवेजों का काफ़ी उल्लेख किया है।

भारत को स्वदेशी बनाने में उनका योगदान

पिछले 20 वर्षों में राजीव भाई ने भारतीय इतिहास और भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन किया था। अपने सभी प्रवचनों में उन्होंनें लोगों को जागृत करने का काम किया । अंग्रेज़ भारत क्यों आये थे? उन्होंने हमें गुलाम क्यों बनाया? अंग्रेजों ने हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता, हमारी शिक्षा और उद्योगों को क्यों नष्ट किया और किस तरह से नष्ट किया? इस पर विस्तार से जानकारी दी ताकि हम पुन: गुलाम न बन सकें।

पिछले 20 वर्षों में राजीव भाई ने लगभग 15000 से अधिक व्याख्यान दिये जिसमें से कुछ हमारे पास उपलब्ध हैं।

आज भारत में लगभग 5000 से अधिक विदेशी कंपनियां हमें लूट रही हैं। उन्होंने उनके खिलाफ स्वदेशी आन्दोलन की शुरूआत की। देश में सबसे पहली स्वदेशी-विदेशी सूची तैयार करके स्वदेशी अपनाने का आग्रह किया।

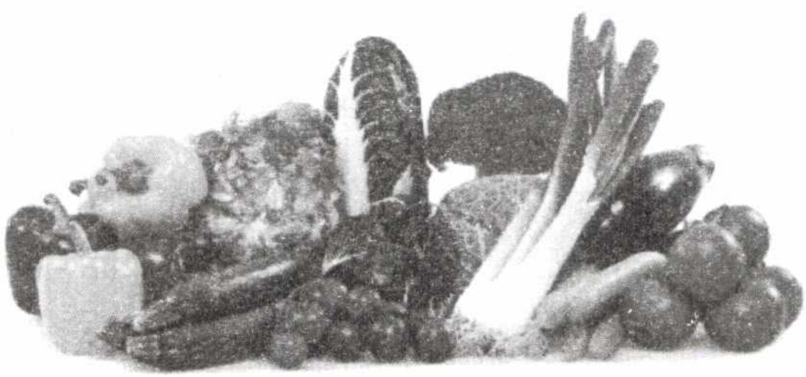

www.thearyasamaj.org

मांसाहार से हानियाँ

वैश्विक उष्मण (Global Warming)

ग्लोबल वार्मिंग क्या है?

आजकल समाचार पत्रों व टेलीविजन के माध्यम से अक्सर आपने सुना होगा की सारी दुनिया में गर्मी बढ़ रही है। धीर-धीरे दुनिया और ज्यादा गर्म हो रही है। आज से लगभग 10 साल पहले दुनिया का जो औसतन तापमान था उसमें लगभग $2^{0}C$ की वृद्धि हो गई है। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर इसी रफ्तार से गर्मी बढ़ती रही तो अगले 20-22 वर्षों में (और अधिक से अधिक 2050 तक) दुनिया की गर्मी लगभग $4^{0}C$ तक बढ़ जायेगी।

1. गर्मी बढ़ने से उत्तरी ध्रुव व हिमालय की बर्फ बहुत तेजी से पिघलेगी। इससे नदियों में बहुत ज्यादा पानी आ जायेगा जो अंततः समुद्र में जा मिलेगा। इससे समुद्र का जलस्तर बढ़ जायेगा। आपको जानकर दुःख होगा समुद्र के पानी में अगर 2-4 इंच की वृद्धि भी हो गई तो की दुनिया के बहुत सारे देश, शहर और गाँव डूब जाएंगे।
2. गर्मी बढ़ने से मौसम चक्र में परिवर्तन आयेगा। मौसम चक्र में परिवर्तन के कारण कृषि उत्पादन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।

www.thearyasamaj.org

क्योतो प्रोटोकॉल (KYOTO PROTOCOL)

वैश्विक उष्मण को कम करने के लिए बहुत से देशों ने एक वार्ता की, जो क्योतो प्रोटोकॉल के नाम से जानी जाती है। जापान नाम के देश में एक छोटा सा शहर है जिसका नाम है क्योतो। दिसंबर 1997 में वहाँ दुनिया के लगभग 156 देशों के राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री एकत्रित हुए। भारत के प्रधानमंत्री भी वहाँ गए थे। वहाँ पर एक वार्ता की गई। वार्ता का मुख्य विषय था कि दुनिया में गर्मी बढ़ने के कारणों का पता लगाया जाए और उनको कम करने के लिए सारे देश मिलकर प्रयास करें।

इसी विषय पर वहाँ एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संधि हुई जिसका नाम है, क्योतो प्रोटोकॉल (KYOTO PROTOCOL) गर्मी बढ़ने के कारणों का पता लगाने के लिए सारी दुनिया में वैज्ञानिकों के दल बने। इसमें वैज्ञानिकों का एक बड़ा दल बना जिसके अध्यक्ष थे - डॉ आर.के. पचौरी। इस दल ने लगभग 4 वर्षों के अध्ययन के बाद बताया कि सारी दुनिया में गर्मी बढ़ने का मुख्य कारण है लोगों द्वारा मांसाहरी भोजन का उपयोग व उपभोग। (कृप्या दिये गये ग्राफ को देखें)

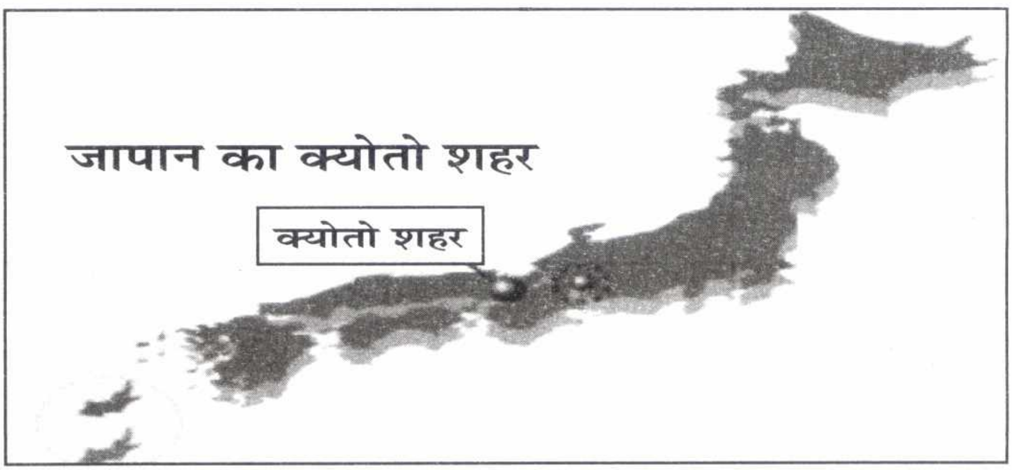

www.thearyasamaj.org

वैश्विक उष्मण

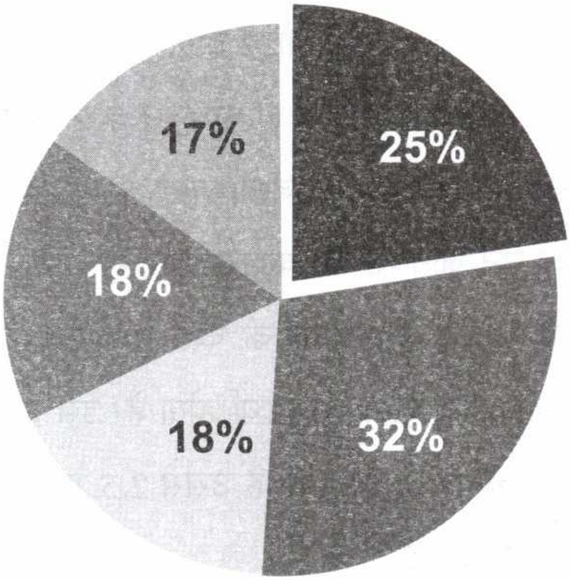

100% में से

25% गर्मी मांसाहारी भोजन के कारण बढ़ रही है।

32% गर्मी गैर जरूरी उत्पादन से बढ़ रही है। (फ्रिज, ए.सी.)

18% गर्मी जरूरी उत्पादन के कारण बढ़ रही है।

18% गर्मी गैर जरूरी यातायात के कारण बढ़ रही है।

17% गर्मी अन्य (प्रदूषण, थोड़ा हिस्सा खेती और जानवरों के कारण) बढ़ रही है।

अगर सारी दुनिया के लोग शाकाहारी हो जायें तो सीधे-सीधे 25% गर्मी कम की जा सकती है।

www.thearyasamaj.org

माँस उत्पादन से गर्मी कैसे बढ़ती है?

1. माँस का उत्पादन दुनिया के कुछ देशों में होता है और फिर यह माँस अन्य देशों में बिक्री के लिए भेजा जाता है। माँस के उत्पादन करने के लिए जानवरों को ट्रक में भरकर माँस उत्पादन केंद्र तक ले जाया जाता है। उसमें फालतू डीज़ल-पैट्रोल खर्च होता है। फिर उन जानवरों को काटकर उनका माँस निकाला जाता है। उस माँस को डिब्बों में भरकर दुनिया भर के देशों में बेचने के लिए भेजा जाता है। उसमें भी फालतू डीजल-पैट्रोल का खर्चा होता है। इस तरह जरूरी यातायात के लिए डीजल-पैट्रोल का जो खर्चा होता है उससे 2.5 गुना डीज़ल और पैट्रोल इस गैर जरूरी यातायात में खर्च होता है ।
2. माँस को कम तापमान पर रखना पड़ता है, जिससे वो जल्दी खराब न हो। माँस को कम तापमान पर रखने के लिए हमेशा वातानुकूलित (Air conditioned) स्थिति में रखना पड़ता है। वातानुकूलित स्थिति में रखने के लिए जिन गैसों का प्रयोग होता है, वो गर्मी बढ़ाने के सबसे बड़े कारणों में से हैं।

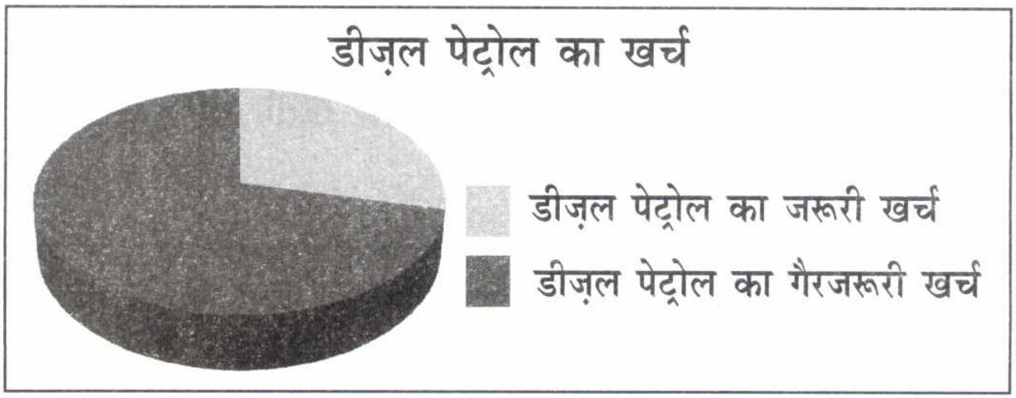

www.thearyasamaj.org

भोजन की कमी और माँसाहार

प्रश्न : क्या हमारे पास सब मनुष्यों के लिए अनाज है?

आपके मन में यह प्रश्न आएगा की सारी दुनिया अगर माँस खाना छोड़ दे तो क्या इतना कृषि उत्पादन है कि सबका पेट भर सके?

उत्तर : इस समय पूरी दुनिया में 650 करोड़ लोग रहते हैं। अगर सारी दुनिया शाकाहारी हो जाए और माँस उद्योग पर ताला लग जाए, तो जितना भोजन पैदा हो रहा है वो 1300 करोड़ लोगों के लिए पर्याप्त हो जाएगा। माँस के उत्पादन के लिए जानवरों को कत्ल किया जाता है। दुनिया में सबसे ज्यादा कत्ल होने वाला प्राणी है गाय और गाय के वंश का बैल, बछड़ा और बछड़ी।

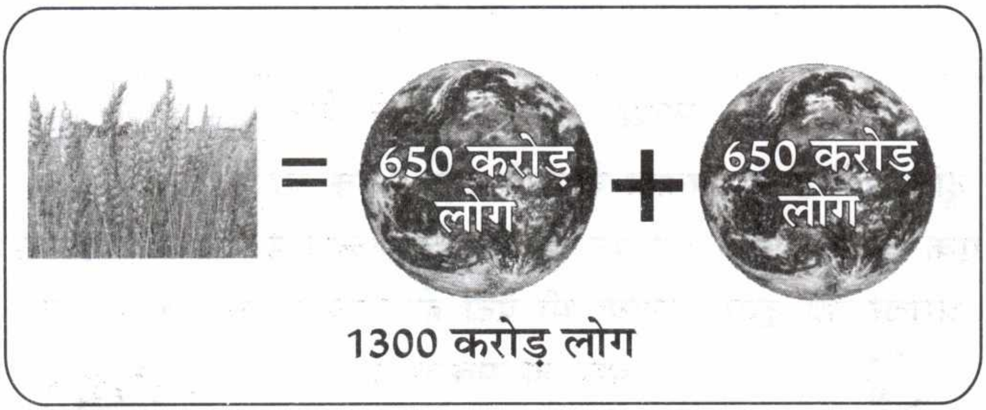

www.thearyasamaj.org

यदि घटते हुए क्रम में देखा जाये तो सबसे ज्यादा कत्ल होने वाले प्राणी निम्न प्रकार से हैं :-

1. गाय, बैल (गाय बैल घास खाते हैं।)
2. सूअर (सूअर मनुष्य का मल और अन्य चीजें खाता हैं।)
3. भैंस (भैंस घास खाती हैं।)
4. बकरे, बकरी, भेड़ (बकरे, बकरी, भेड घास खाते हैं।)
5. मुर्गी, मुर्गे (मुर्गे और मुर्गियाँ छोटे कीड़े खाते हैं।)
6. छोटे पक्षी (छोटे पंछी भी छोटे कीड़े और इसी तरह की चीजे खाते हैं।)

ऊपर लिखे विवरण से पता चलता है कि इसमें से किसी भी प्राणी का प्राकृतिक भोजन अन्न नहीं है फिर भी माँस उत्पादन को बढ़ाने के लिए इन सभी प्राणियों को अन्न खिलाया जाता है क्योंकि अगर कत्ल करने से पहले जानवरों के शरीर में माँस ज्यादा हो तो माँस उद्योगों को अधिक लाभ होता है। माँस उत्पादन करने वाली कम्पनियाँ जबरदस्ती जानवरों को अनाज खिलाती हैं क्योंकि अनाज खिलाने से जानवर बहुत जल्दी मोटे होने लगते हैं। इस तरह माँस उत्पादन करने वाली कम्पनियाँ जानवरों को वो भोजन कराती है, जो मनुष्य के लिए है। तो मनुष्य के हिस्से में भोजन कम पड़ना शुरू हो जाता है और यही भोजन की कमी लाखों-करोड़ों लोगों को भूख से मार देती है।

क्या आप जानते हैं?

दुनिया में इतना अनाज पैदा हो रहा है कि वो सारी दुनिया में एक- एक व्यक्ति का पेट तो भर ही सकता है, साथ ही इसके बराबर की दूसरी दुनिया भी पैदा हो जाये तो भी सबका पेट भरा जा सकता है।

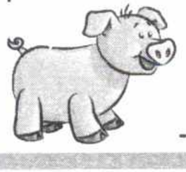

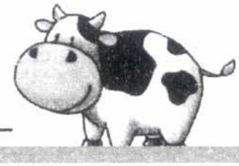

www.thearyasamaj.org

क्या आप जानते हैं?

एक एकड़ खेत में चार फसलें हो जाती है। अगर इन चार फसलों में गेहूँ, चावल, दालें, सब्जियाँ ले लें तो एक एकड़ खेत की एक साल की खेती में 22 लोगों को भोजन कराया जा सकता है। अब अगर, इस खेत में जो कुछ भी पैदा हो उसे जानवरों को खिला दिया जाए तो उससे जो माँस पैदा होगा वो केवल दो व्यक्तियों का पेट भर सकता है।

विकासशील देशों में जानवरों को कुल कृषि से उत्पन्न अनाज का लगभग 40% हिस्सा खिला दिया जाता है। भारत जैसे दुनिया में 186 विकासशील देश हैं जैसे इंडोनेशिया, मलेशिया, पाकिस्तान, बंग्लादेश आदि जो जानवरों को कुल कृषि की उपज का 40% हिस्सा खिलाते हैं। विकसित देशों में जानवरों को कुल कृषि से उत्पन्न अनाज का लगभग 70% हिस्सा खिला दिया जाता है। अमरीका जैसे दुनिया में 17 विकसित देश हैं जैसे जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन, कनाडा आदि जो जानवरों को कुल कृषि उपज का लगभग 70% हिस्सा खिला देते हैं।

अगर 40% और 70% का औसत निकाला जाए और तो 55 प्रतिशत निकलता है। अर्थात् दुनिया में औसतन लगभग आधा अनाज जानवरों को खिलाकर, उनके माँस को कुछ लोग खाते हैं। इससे अच्छा अगर वो अनाज सीधे ही हम खा जाएँ, तो जितनी जनसंख्या की आज पूर्ति हो रही है उससे दुगुनी जनसंख्या की पूर्ति हो जाएगी।

www.thearyasamaj.org

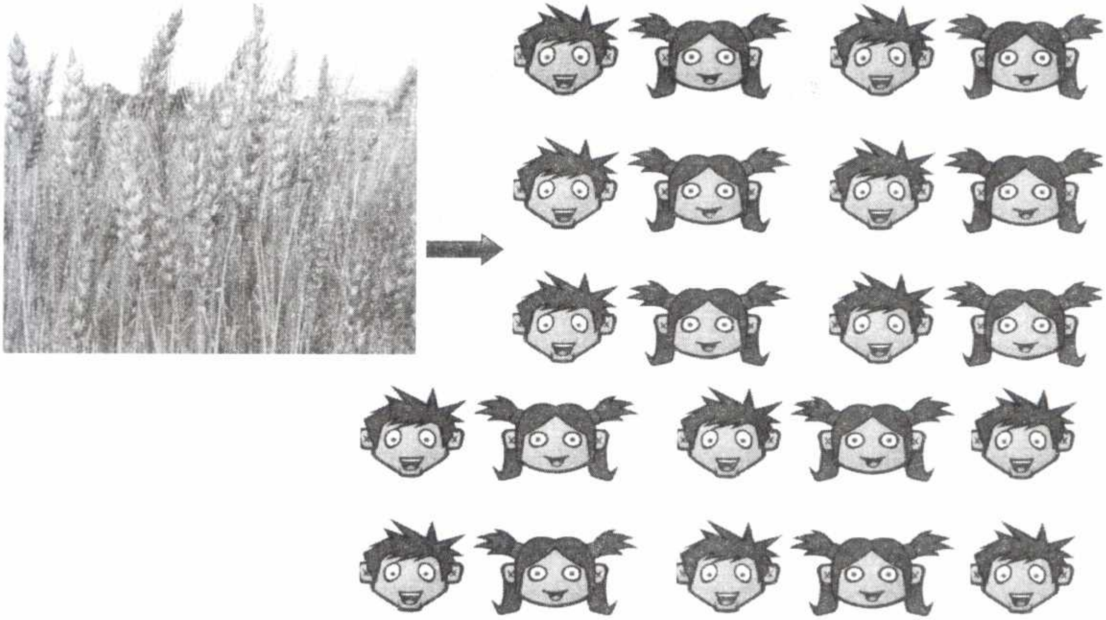

एक एकड़ खेत के एक साल के उत्पादन से 22 लोगों का पेट भरा जा सकता है।

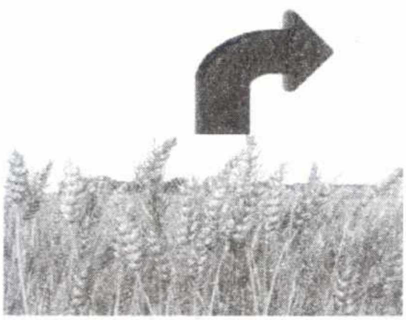

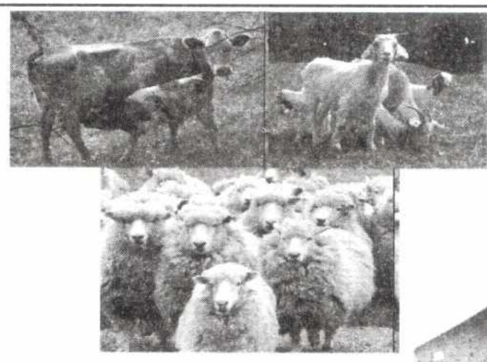

एक एकड़ खेत के एक साल के उत्पादन को अगर जानवरों को खिला दिया जाये और फिर उनका मांस खाया जाये तो केवल 2 लोगों का पेट भरा जा सकता है।

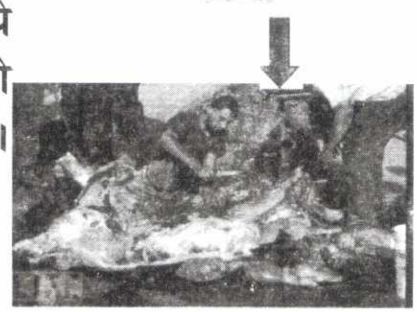

www.thearyasamaj.org

प्रश्न : जानवरों के लिए भोजन कहाँ से आएगा?

उत्तर : प्रकृति व भगवान ने ऐसी सुन्दर व्यवस्था कर रखी है जहाँ से हमारे लिए भोजन आता है, वहीं से जानवरों के लिए भी पैदा होता है। उसके लिए कोई अतिरिक्त प्रयास नहीं करना पड़ता है। गेहूँ के पौधे का ऊपर वाला लगभग एक फुट का हिस्सा ही हमारे काम आता है, और बचा हुआ नीचे का छः से सात फुट का हिस्सा जानवरों के काम आता है। मनुष्य के लिए कुल जितना उत्पादन चाहिए, उससे 6-7 गुना ज्यादा उत्पादन चारे का हो जाता है। इसी तरह मक्का और बाजरा में भी ऊपर का बाल वाला एक फुट हिस्सा हमारे काम आता है और बाकी का 6-7 फुट का हिस्सा जानवरों के काम आता है

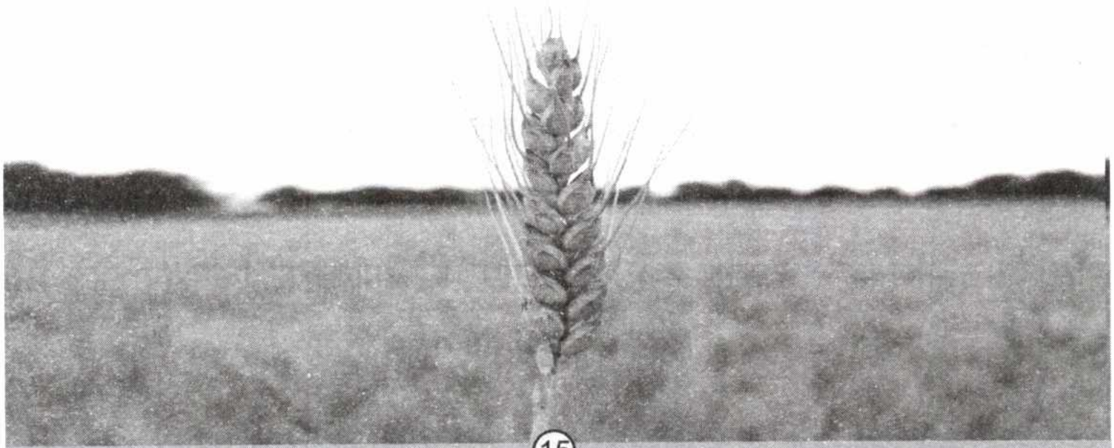

www.thearyasamaj.org

आखिर दुनिया में कितना माँस का उत्पादन हो रहा है?

दुनिया में कुल 200 देश हैं। सारे देशों को मिलाकर माँस का कुल उत्पादन 26 करोड़ 50 लाख मीट्रिक टन (एक मीट्रिक टन में लगभग 1000 किलोग्राम होते हैं)। माँस पैदा करने वाली कम्पनियाँ बोल रही हैं, कि 2050 तक इस उत्पादन को 46 करोड़ मीट्रिक टन कर देंगे। इसका मतलब जो उत्पादन आज हो रहा है उसका लगभग 2 गुना। इसके लिए माँस उत्पादन करने वाली कम्पनियाँ पूरी दुनिया को माँसाहारी बनाने के काम में लग गयी है। इनके विज्ञापन रोज टी.वी. पर आ रहे हैं।

ये माँस उत्पादन करने वाली कम्पनियों का ही विज्ञापन है "संडे हो या मंडे, रोज खाओ अंडे"? और हमारे देश में ऐसे कुछ अभिनेता-अभिनेत्रियाँ, खिलाड़ी और सम्माननीय लोग पैसे के लालच में अंडों का विज्ञापन करते हैं, जो खुद निजी जिन्दगी में शाकाहारी हैं। भारत जैसे 184 गरीब देशों में कुल माँस उत्पादन का लगभग 40% खपत होता है। अमरीका जैसे 16 अमीर देशों में कुल माँस के उत्पादन का 60% खपत होता है इसका मतलब साफ है कि गरीब देश अभी भी बहुत सात्विक और धार्मिक हैं।

कुल माँस का उत्पादन है, 26 **करोड़ 50 लाख टन** जिसमें से मुर्गे-मुर्गियाँ के माँस का उत्पादन है 1 **करोड़ टन**। सूअर के माँस का उत्पादन है 10 **करोड़ टन**। गाय के माँस का उत्पादन है 6 **करोड़ टन**। इतने माँस के उत्पादन के लिए हर साल पूरी दुनिया में 46 अरब (4600 करोड़) जानवरों का कत्ल होता है।

www.thearyasamaj.org

भारत की स्थिति

भारत में हर साल 58 लाख मीट्रिक टन माँस का उत्पादन होता है अर्थात् पूरी दुनिया में माँस के उत्पादन का लगभग 2%.

अगर हम मान लें कि भारत में 121 करोड़ नागरिक रहते हैं, तो आंकड़ों के अनुसार इनमें से लगभग 70% नागरिक हैं जो शाकाहारी हैं और 30% नागरिक हैं जो माँसाहारी हैं। भारत सरकार के 2009 के आंकड़ों के अनुसार भारत में माँस के उत्पादन में गाय का माँस 14 लाख टन पैदा होता है, भैंस का माँस करीब 14 लाख टन, मटन करीब 2.5 लाख टन, सूअर का माँस करीब 6 लाख 30 हजार टन, मुर्गे-मुर्गी का माँस 16 लाख टन और बाकी छोटे जानवर शामिल हैं। 2008 में भारत में 58 लाख मीट्रिक टन माँस के उत्पादन के लिए 10 करोड़ 50 लाख जानवरों का कत्ल किया गया। इसमें से करीब 4.5 करोड़ जानवर हैं जो गाय, भैंस, बैल की श्रेणी के हैं और बाकी छोटे जानवर हैं जैसे बकरे-बकरी, मुर्गे-मुर्गी आदि।

भारत देश में लगभग 3600 तो सरकार के रजिस्टर्ड (Registered) कत्लखाने हैं, और करीब 36000 अनरजिस्टर्ड (Unregistered) कत्लखाने हैं। इनमें हर साल 58 लाख मीट्रिक टन माँस का उत्पादन होता है। चीन में हर साल 12 करोड़ मीट्रिक टन माँस का उत्पादन होता है। यूरोप में हर साल करीब 3.6 करोड़ मीट्रिक टन माँस का उत्पादन होता है। जो अनाज मनुष्यों के खाने के लिए पैदा होता है उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा जानवरों को खिला दिया जाता है। यदि जानवरों वाला अनाज मनुष्यों को खाने को मिल जाये तो सारी दुनिया की भुखमरी खत्म हो जाएगी।

www.thearyasamaj.org

दुनिया की लगभग
1/3 जनसंख्या
भुखमरी की
कगार पर है।

माँस की खपत प्रति वर्ष

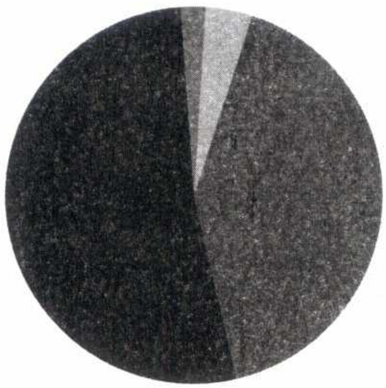

- भारत की हर मांसाहारी व्यक्ति 3.5 किलो मांस
- चीन में १5 किलो मांस प्रति व्यक्ति
- यूरोप / कनाडा में 130 किलो मांस प्रति व्यक्ति
- अमेरिका में 165 किलो मांस प्रति व्यक्ति

www.thearyasamaj.org

संयुक्त राष्ट्र (United Nations) के अनुसार हर दिन दुनिया में 40,000 लोग भूख से मर जाते हैं। सारी दुनिया में लगभग 200 करोड़ लोगों की भुखमरी की हालत है, अर्थात् दुनिया की लगभग 1/3 आबादी भुखमरी के कगार पर है।

संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था है जिसका नाम है फूड एंड एग्रीकल्चरल औरगनाइज़ेशन (Food and Agricultural Organisation)। उन्होंने एक सर्वेक्षण किया और उनकी रिर्पोट यह कहती है कि सारी दुनिया के माँस खाने वाले लोग अपने माँस के उपभोग में सिर्फ 10% की भी कटौती कर दें या 10% लोग शाकाहारी हो जाएँ तो एक भी व्यक्ति पूरी दुनिया में भूख से नहीं मरेगा। अमरीका में हर आदमी एक साल में 165 किलो माँस खा जाता है। चीन में हर साल एक आदमी 95 किलो माँस खा जाता है, यूरोप ओर कनाडा में हर आदमी साल में लगभग 130 किलो माँस खा जाता है। भारत में हर आदमी जो मांसाहारी है, साल में 3.5 किलो माँस खा जाता है। भारत की तुलना अगर चीन, अमरीका, यूरोप आदि से करें तो भारत में अभी भी काफी कम माँस का उपभोग होता है। फिर भी भारत के लोग अगर 10% माँस कम खाए या भारत में 10% लोग शाकाहारी हो जाए, अमरीका में हर व्यक्ति जो 165 किलो माँस खाता है वो उसे 150 किलो कर दे, कनाडा का आदमी 120 या 115 किलो कर दे, या चीन का व्यक्ति 80 किलो कर दे। अर्थात् सब अपने-अपने माँस के उपभोग में 10% की कटौती कर दें तो दुनियाँ के 200 करोड़ लोगों का पेट भरा जा सकता है और प्रतिदिन 40 हजार लोग जो भूख से मर रहे हैं, उनको बचाया जा सकता है।

www.thearyasamaj.org

माँस उद्योग के कारण जंगलों की कटाई

वैज्ञानिकों द्वारा ये बात बताई जा रही है कि जंगलों की कटाई का सबसे बड़ा कारण है - माँस उद्योग का बढ़ते चले जाना। माँस उद्योग में माँस की पैकिंग और उस पैकिंग को एक जगह से दूसरी जगह भेजने के लिए सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाला कच्चा माल है - लकड़ी। जिस कच्चे माल का डिब्बे बनाने में इस्तेमाल होता है वो जंगल से ही प्राप्त होता है। इसके लिए सबसे ज्यादा जंगलों को काटा जा रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि जंगलों की समाप्ति को अगर रोकना है तो माँस उद्योग को बंद कर दिया जाए।

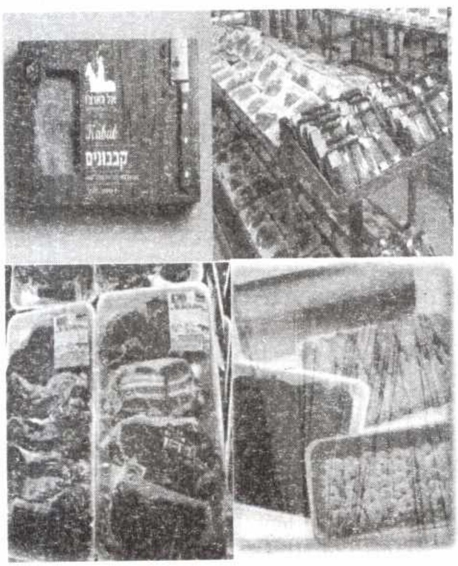

www.thearyasamaj.org

माँस उद्योग के कारण पानी की बर्बादी।

अगर जमीन बहुत ज्यादा बंजर हो तो एक किलो चावल पैदा करने में अधिकतम 5000 लीटर पानी लगता है, और जमीन उपजाऊ हो तो एक किलो चावल पैदा करने में मात्र 3 से 3.4 हजार लीटर पानी लगता है। इसी तरह से अगर जमीन बंजर हो तो एक किलो गेहूँ पैदा करने में अधिकतम 1000-1500 लीटर पानी लगता है, सामान्य जमीन पर 700-800 लीटर पानी लगता है।

अगर जमीन बंजर हो एक किलो बाजरा पैदा करने में 5000 लीटर और सामान्य रूप से मात्र 500 लीटर पानी लगता है। एक किलो मक्की पैदा करने में 700 से 750 लीटर पानी लगता है।

परन्तु एक किलो माँस पैदा करने में न्यूनतम 70,000 लीटर पानी लगता है। मतलब सीधा सा है कि एक किलो अनाज पैदा करने में जितना पानी खर्च होता है उससे 10 गुना से लेकर 100 गुना ज्यादा पानी माँस पैदा करने में लगता है। एक किलो माँस पैदा करने के लिए 70,000 लीटर पानी खर्च होता है तो 285000000 मीट्रिक टन माँस पैदा करने के लिए

(285000000x1000x70,000=19950000000000000)

लीटर पानी बर्बाद होता है।

www.thearyasamaj.org

पानी का खर्च (लीटर में)		
	न्यूनतम	अधिकतम
1 किलो चावल पैदा करने में	3000-3400	5000
1 किलो गेहूँ पैदा करने में	700-800	1000-1500
1 किलो मक्की पैदा करने में	700	750
1 किलो बाजरी पैदा करने में	500	5000
1 किलो माँस पैदा करने में	**70,000**	------

क्या आप जानते हैं?

आप अपने स्नानघर में नल खोलकर खड़े हो जाइये। 7 मिनट तक रोज नहाइए, शावर से नहाइए, बाल्टी से नहाइए। 6 महीने लगातार नहाइए। इतने दिनों में जितना पानी आप खर्च करेंगे उतना पानी एक किलो माँस के उत्पादन में लगता है। अर्थात् हम 6 महीने नहाने में जो पानी खर्च करते हैं, उतना ही पानी एक किलो माँस पैदा करने में लग जाता है।

अच्छे से अच्छा पानी पीने वाला व्यक्ति अगर एक दिन में 3 लीटर पानी पिए। तो एक महीने में 90 लीटर पानी पिएगा और साल में औसतन 900-1000 लीटर पानी पिएगा। इसी तरह 70 साल में वो व्यक्ति 70,000 लीटर पानी पीएगा। उतना ही पानी एक किलो माँस के उत्पादन में लगता है।

www.thearyasamaj.org

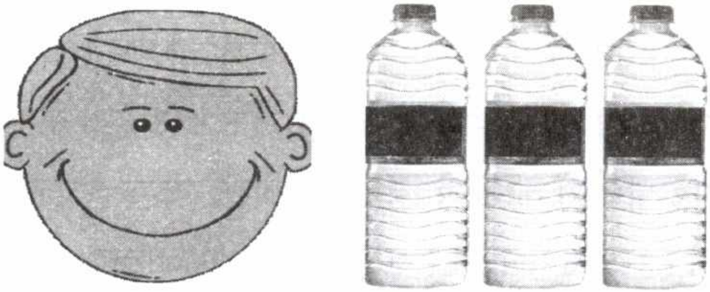

अच्छे से अच्छा पानी पीने वाला व्यक्ति एक
दिन में लगभग 3 लीटर पानी पीता है।

70 साल में वही व्यक्ति 70,000 लीटर पानी पियेगा।
उतना ही पानी एक किलो मांस के उत्पादन में लग जाता है।

www.thearyasamaj.org

3. भारत में 20 करोड़ परिवार हैं। अगर हर व्यक्ति की उम्र 100 साल मान ली जाए तो माँस पैदा करने वाले उद्योग के लिए जितना पानी खर्च होता है उतने ही खर्च में 20 करोड़ परिवारों का सारी जिंदगी का पानी का खर्च चल सकता है। जबकि आज़ादी के 63 साल बाद भी हमारे भारत देश में लगभग 14 करोड़ परिवारों को पीने का शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं है। 14 करोड़ परिवारों की माताएं, बहनें पीने का शुद्ध पानी लाने के लिए रोज़ सुबह 3-4 बजे उठती है। एक खाली बाल्टी लेकर जाती है। उसमें पीने का पानी भरके लाती है। उस पानी से भोजन बनाती है। फिर दोपहर को वही खाली बाल्टी लेकर जाती है, फिर पानी लाती है और शाम का भोजन बनाती है। इसी में उनका पूरा जीवन तमाम होता है। एक तरफ भारत के 14 करोड़ परिवारों को पीने का शुद्ध पानी न मिले और दूसरी तरफ माँस उत्पादन करने वाली कम्पनियाँ हजारों लीटर पानी बर्बाद करें? ये तो बहुत बड़ा अन्याय है।

www.thearyasamaj.org

माँस उद्योग के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएं

जानवरों की जब हत्या की जाती है तो बहुत क्रूरता और बर्बरता से की जाती है। उनको तड़प-तड़प कर मरने के लिए मजबूर किया जाता है। जो बड़े जानवर है जैसे गाय, बैल, भैंस जैसे पहले तो उनको भूखा रखा जाता है और बार-बार भूखा कर रखकर उनके शरीर को कमज़ोर किया जाता है। फिर उनके ऊपर गर्म पानी (70-100 डिग्री सेंटीग्रेट) की बौछार डाली जाती है, जिससे उनका शरीर फूलना शुरू हो जाता है। उसमें सूजन आना शुरू हो जाती है। जब उनका शरीर पूरी तरह से फूल जाता है तो जीवित स्थिति में उनकी खाल को उतारा जाता है। उस समय जो खून निकलता है उसे इकट्ठा किया जाता है। फिर गर्दन पर एक तरफ छोटा सा कट लगाया जाता है। जिसमें से बहुत तेजी से खून निकलता है। (परन्तु उसको पूरी तरह से मारा नहीं जाता) उस समय तक जानवर खुद को छुड़ाने की कोशिश करते है। धीरे-धीरे स्पंदन कम होने लगते हैं और जानवर मर जाते हैं तब उस जानवर की पूरी गर्दन काटी जाती है। फिर उनके पाँव अलग से काटे जाते हैं। फिर शरीर का एक-एक अंग अलग से निकाला जाता है। अन्दर की अंतड़ियों को निकाला जाता है। बड़ी आंत, छोटी आंत को खींचकर निकाला जाता है। अक्सर ये देखा गया है कि गाय, भैंस, बैल, मुर्गी जैसे जानवरों की गर्दन पर जब कट लगाया जाता है, तो वो जिन्दा रहने के लिए बहुत चीखते-चिल्लाते हैं और उनके शरीर में कुछ परिवर्तन होने लगते हैं।

www.thearyasamaj.org

जैसे कि अगर कोई व्यक्ति आप पर हमला करे और आपको मार डालने की कोशिश करे, तो आपके शरीर में कुछ खास तरह के परिवर्तन होंगे। जैसे आपके दिल की धड़कन तेज हो जाती है। आपके पैरों के तलवों और हाथों की हथेलियों में पसीना आने लगता है। आपका रक्तचाप (Blood-Pressure) बहुत तेजी से बढ़ने लगता है। इस तरह जब जानवरों की हत्या की जाती है, तो उनके शरीर में भी कुछ परिवर्तन आते होंगे। जानवरों की चीखें पूरे वातावरण को तरंगित कर देती है और वातावरण में ही घूमती रहती है। इसका पूरे वातावरण और अन्य मनुष्यों पर भी बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और यह नकारात्मक प्रभाव जब ज्यादा बढ़ने लगता है तो लोगों में हिंसा की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है और इस हिंसा और नकारात्मकता से सारी दुनिया में अत्याचार और पाप बढ़ रहा है। दिल्ली विश्वविद्यालय में 3 प्रोफेसर हैं जिन्होंने 20 साल इस पर रिसर्च और अध्ययन किया है ये नाम है डॉ. मदन मोहन बजाज, डॉ. मोहम्मद सैय्यद मोहम्मद इब्राहिम और डॉ. विजय राज सिंह उनकी फिजिक्स (Physics) की रिसर्च ये कहती है कि जानवरों का जितना कत्ल किया जाएगा, जानवरों पर जितनी हिंसा की जाएगी, उतना ही अधिक दुनिया में भूकंप आएँगे। उन्होंने काम किया कि दुनिया और भारत में जहाँ-जहाँ पर कत्लखाने है, उन्होंने वहाँ रहकर देखा। जानवरों से निकलने वाली शौक वेवस (Shock Waves) को ऐब्जार्ब (Absorb) किया। और उनको नापा, तोला और उनका अध्ययन किया। उन्होंने पाया की ज्यादा से ज्यादा दुनिया में जो प्राकृतिक आपदाएं हो रही है, उनका एक बड़ा कारण है कत्लखाने और उनसे निकलने वाली जानवरों की चीख पुकार।

www.thearyasamaj.org

मनुष्यों के रहने के स्थान को कत्लखानों के लिए आरक्षित करना उचित नहीं।

मनुष्य के लिए जो स्थान सुरक्षित है रहने के लिए, और जीवन यापन करने के लिए उसे जानवरों के लिए आरक्षित किया जाता है। क्योंकि ये जो कत्लखानों की जगह है वो एक दो वर्ग किलोमीटर की नहीं, बल्कि हजारों-हजारों वर्ग किलोमीटर की होती है। हजारों वर्ग किलोमीटर में कत्लखानों के चारागाह बनाए जाते हैं, रैंच बनाए जाते हैं। जिन स्थानों पर मनुष्य रह सकता है, ऐसे हजारों किलोमीटर के स्थान को जानवरों के बाड़े के रूप में विकसित किया जाता है।

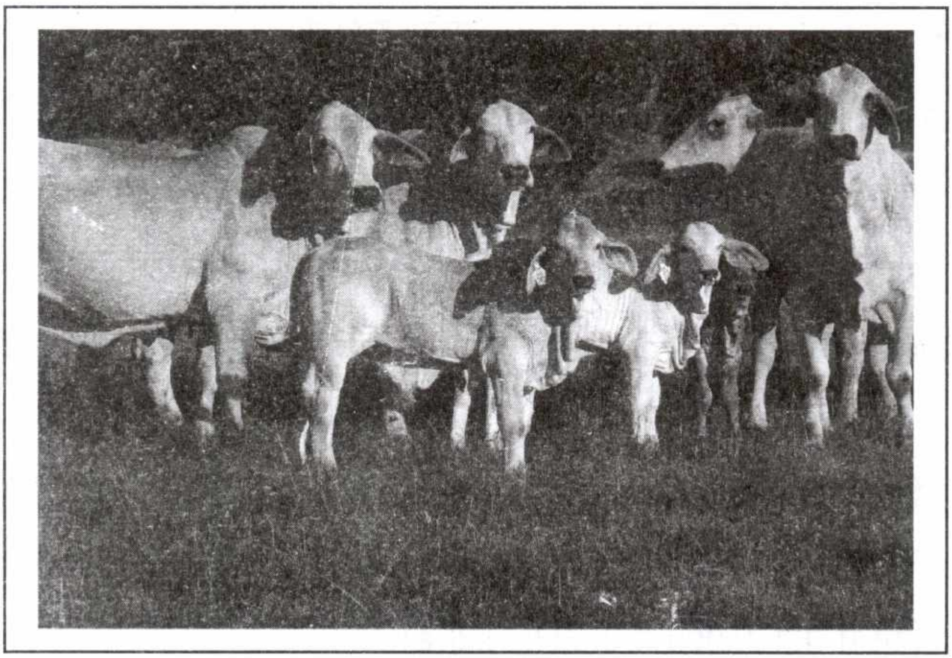

www.thearyasamaj.org

मांसाहार और हिंसा

गाय के बछड़े का माँस वील (Veal) नाम से पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो रहा है। गाय का माँस तो पूरी दुनिया में बीफ (Beef) के नाम से जाना जाता है। ये वील यूरोप और अमरीका में सबसे ज्यादा खाया जाता है। अब आपको बता दूं कि इस वील के उत्पादन में कितनी हिंसा की जाती है।

गाय का बछड़ा जब 24 घंटे का होता है तब उसको उसकी माँ से अलग कर दिया जाता है। फिर उस बछड़े को ले जाकर एक ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ न तो वह खड़ा हो सकता है, न बैठ सकता है और न लेट सकता है। आप कल्पना कीजिए ऐसे स्थान की। कितना संकुचित और कितना छोटा होगा। और फिर उसका कत्ल किया जाता है।

गाय के बच्चे का माँस, दुनिया में सबसे महँगा बिकता है। माँस खाने वालों से पूछा जाता है तो वो बताते है कि यह माँस सबसे ज्यादा मुलायम और स्वादिष्ट होता है। कुछ लोगों को ये नर्म माँस मिलता रहे और उनकी जीभ का स्वाद बना रहे उसके लिए करोड़ों गाय के बच्चों को जन्म लेने के 24 घंटों के अन्दर उनकी माँ से अलग कर दिया जाता है। और फिर बहुत निर्ममता और बर्बरता से उनकी हत्या कर दी जाती है।

(क) विश्व का विशालतम कत्लखाना : 36000 गायें प्रतिदिन कट रही है।

कैलिफोर्निया (California) में दुनिया का सबसे बड़ा कत्लखाना है। एक दिन में वहाँ 36000 गाय काटी जाती है।

www.thearyasamaj.org

(ख) देवनार में 14000 जानवर प्रतिदिन :
महाराष्ट्र में भारत का सबसे बड़ा कत्लखाना है, जहाँ प्रतिदिन 14000 जानवर काटे जाते हैं।

(ग) कैलिफोर्निया में काम करने वाले एक व्यक्ति ने आखों देखा वर्णन किया है। उसके द्वारा लिखी गई एक छोटी सी पुस्तिका है। वो कहता है कि "कई बार हमने देखा है कि गाय के एक दिन के बच्चे को जब हम कत्ल करने के लिए गाय से छीनकर ले आते हैं, तो वो गाय पागलों की तरह अपने बच्चे को ढूंढने के लिए भागती है। रास्ते में उसे कोई भी मिल जाए, उसको टक्कर मार देती है। घायल कर देती है। उस गाय में इतनी शक्ति कहाँ से आ जाती है। जबकि एक दिन पहले ही वो गाय माँ बनी होती है। उसको बस अपना बच्चा चाहिए होता है। गाय के बच्चे का कत्ल करते समय गाय पागलों जैसी स्थिति में व्यवहार करने लगती है। और अंत में फिर उस गाय का भी कत्ल कर दिया जाता है।"

(घ) फिर उस गाय का माँस आप खाते हैं। तो क्या आप पागल नहीं होंगे? आप सोचिए!

(ङ) भारत में हज़ारों साल से एक बात कही जाती है। और ये बात बिल्कुल सच है कि "जैसा खाओ अन्न वैसा बने मन"। अगर आप ऐसी तड़पती, बिलखती गाय का माँस खायेंगे, उसके बच्चे का माँस खाऐंगे, जानवरों के ऊपर क्रूर हिंसा द्वारा उत्पन्न माँस खाऐंगे, तो आपके मन में भी सात्विकता आ ही नहीं सकती। आपके मन में कोई खतरनाक वृत्ति ही जन्म लेगी कोई राक्षसी वृत्ति ही जन्म लेगी। और शायद उस दुष्ट और राक्षसी वृत्ति का अंतिम दुष्परिणाम यही होगा की दुनिया में खतरनाक किस्म के चोर, डकैत, लुच्चे, लफंगे, बलात्कारी, व्याभिचारी लोग बनेंगे।

www.thearyasamaj.org

(च) हैम्बर्गर

सारी दुनिया में माँस से बनने वाला सबसे ज्यादा बिकने वाला जो भोजन है उसका नाम है है - हैमबर्गर। ये हैमबर्गर गाय के एक दिन के बच्चे के माँस से बनाया जाता है। अब हैमबर्गर बनाते समय इस माँस का रंग सफेद रहे, तो वो बहुत कीमती माना जाता है। और अगर उसका रंग लाल हो जाये तो उसकी कीमत गिर जाती है। ये माँस सफेद रहे, और इसमें थोड़ा भी लाल रंग ना आने पाए इसके लिए गाय को बहुत दिनों तक भूखा रखा जाता है।

भूखा रखकर उसको एनीमिया (Anemia) नाम की बीमारी का शिकार बनाया जाता है। जिसको हम रक्त की कमी या रक्त की अल्पता भी कहते हैं। गाय को इस बीमारी का शिकार बनाके उसके बच्चे को भी इस बीमारी का शिकार बनाया जाता है। गाय जब गर्भवती होती है, तब उसको भूखा रखा जाता है (आपने देखा होगा अगर किसी व्यक्ति को खून की कमी होती है तो वो थोड़ा गोरा दिखता है) रक्त की अल्पता से उस गाय के माँस को सफेद बनाया जाता है। फिर उस गाय के बच्चे को बर्बरता से कत्ल किया जाता है। इसी क्रूरता से प्रतिदिन अमरीका में 90,000 गाय काटी जाती हैं और भारत में प्रतिदिन 14,000 गाय काटी जाती है।

अमरीका में गाय के कत्ल के लिए कानून है। अमरीका में 50 राज्य है। 50 राज्यों की राज्य सरकारों ने कानून बना रखें है गाय के कत्ल के लिए।

परन्तु भारत में 17 राज्य ऐसे हैं जिनकी सरकारों ने गाय के संरक्षण के लिए कानून बना रखें हैं। फिर भी भारत के उन 17 राज्यों में प्रतिदिन गाय काटी जाती हैं।

अमरीका में हर साल लगभग 1000 करोड़ जानवर काटे जाते हैं।

यूरोप में हर साल 700 करोड़ जानवर कटते हैं

www.thearyasamaj.org

मांसाहार और हिंसा

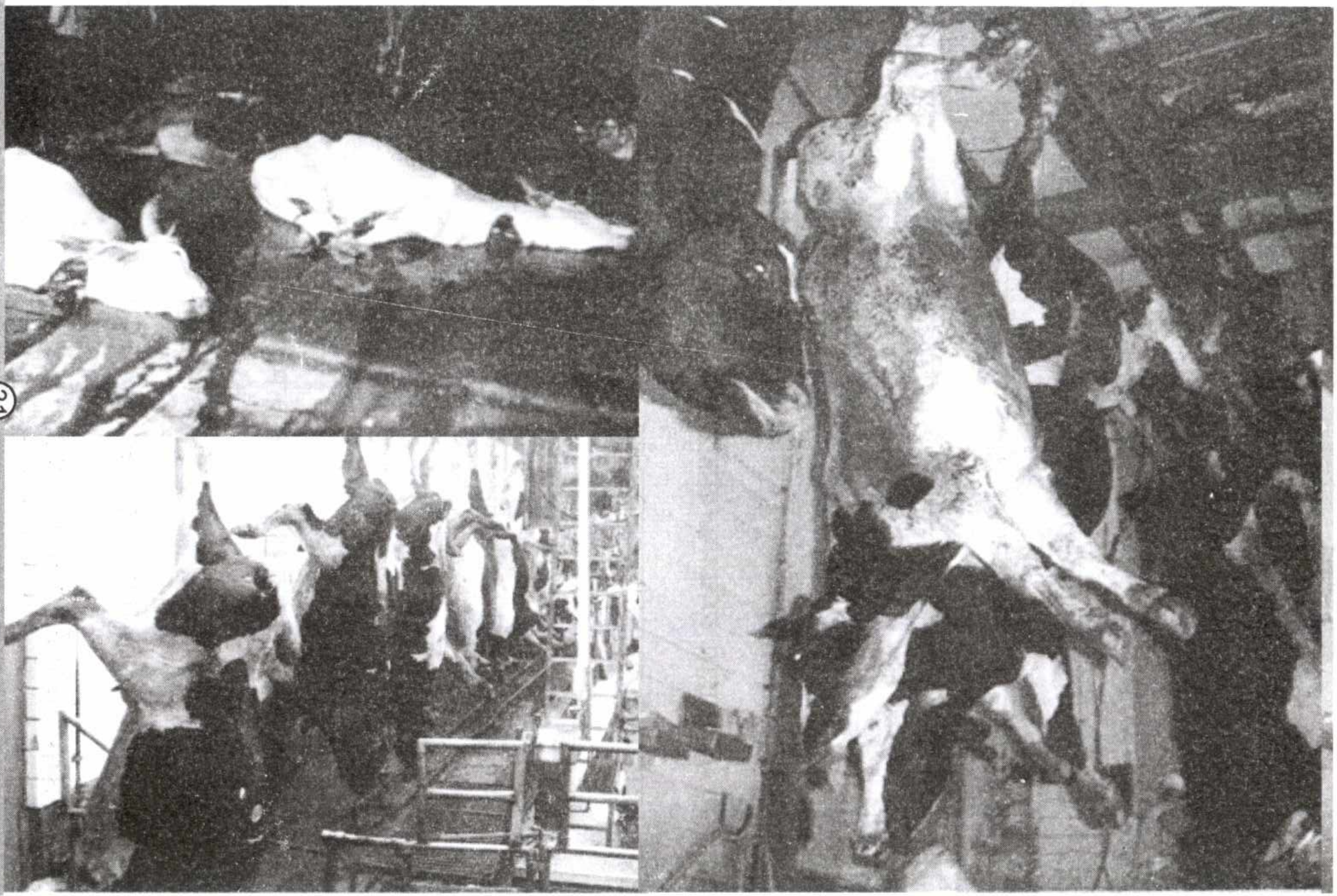

www.thearyasamaj.org

मांसाहार और बीमारियाँ

सारी दुनिया के वैज्ञानिकों का यह कहना है कि शाकाहारी व्यक्ति, माँसाहारी व्यक्ति की तुलना में ज्यादा स्वस्थ होता है।

1. एक माँसाहारी व्यक्ति को एक शाकाहारी व्यक्ति की तुलना में 23 गुना ज्यादा कैंसर होने की संभावना है। इसको सरल भाषा में समझने की कोशिश करें तो हम कह सकते हैं अगर एक माँसाहारी व्यक्ति को अगर एक साल में कैंसर होने की संभावना है तो शाकाहारी व्यक्ति को 23 साल में कैंसर होगा। शाकाहारी व्यक्ति उससे 23 साल ज्यादा जिंदा रहेगा।
2. एक माँसाहारी व्यक्ति को एक शाकाहारी व्यक्ति की तुलना में 40 गुना ज्यादा डायबटीज़ होने की सम्भावना है।
3. माँसाहारी लोगों में शाकाहारी लोगों की तुलना में ज्यादा हृदयाघात (Heart Attack) गठिया (Arthrities), मोटापा होनी की संभावना होती है।

बीमारियों का कारण : जिस जगह जानवरों को रखा जाता है वो जगह बहुत छोटी होती है। छोटी जगह और ज्यादा जानवर होने के कारण जानवर हमेशा तनाव की स्थिति में रहते हैं। माँस पैदा करने वाली कम्पनियों के जो रैंच होते हैं, वहाँ हर सूअर दूसरे सूअर की पूँछ काट लेता है क्योंकि वो हमेशा तनाव में रहते हैं। एक सूअर की रहने की जगह में 10 सूअर रखे जाते हैं। एक मुर्गे को रहने के लिए जितना स्थान चाहिए, उसमें 10 मुर्गों को रखा जाता है।

www.thearyasamaj.org

मांसाहार और बीमारियाँ

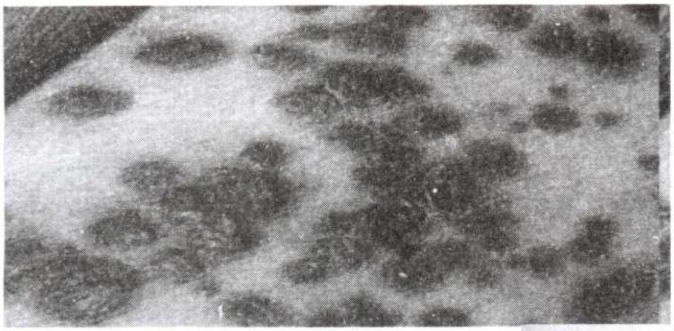

कैंसर (Cancer)

मोटापा (Obesity)

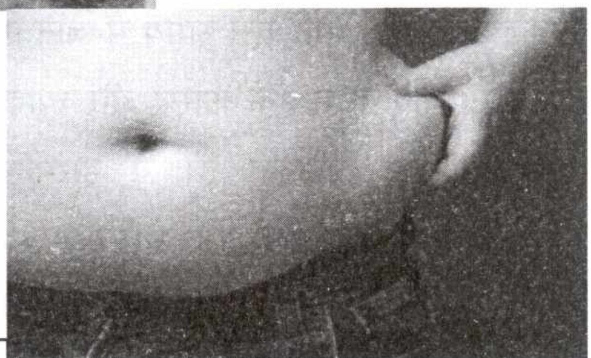

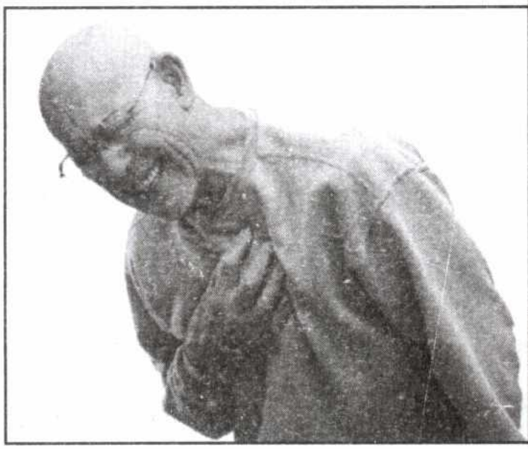

हृदयाघात (Heart Attack)

गठिया (Arthrities)

www.thearyasamaj.org

एक गाय को रहने के लिए जितनी जगह चाहिए उसमे 10 गायों को रखा जाता है। आप कल्पना कीजिए की एक कमरा है जिसमें एक व्यक्ति रह सकता है। उसमें 10 व्यक्ति रहना शुरू कर दें और लगातार 2-4-6 महीने तक रहने लगे। ऐसी स्थिति में कोई भी स्वस्थ व्यक्ति पागल हो सकता है।

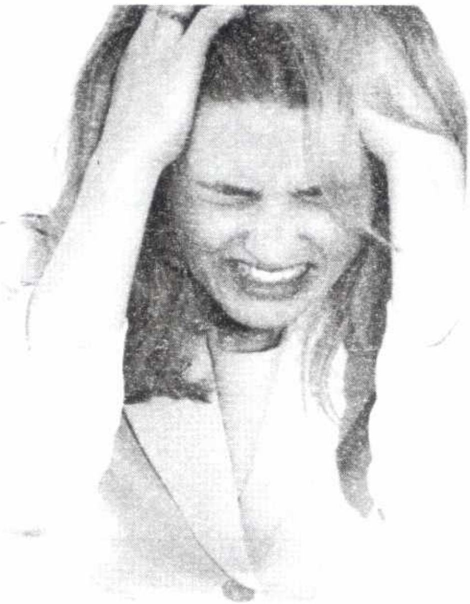

तनाव के समय शरीर से तनाव पैदा करने वाले हारमोंस (Stress Harmones) निकलते हैं और अगर ऐसे समय में जानवर को काटा जाए तो भय के कारण और ज्यादा स्ट्रेस हारमोंस निकलते हैं। ये हारमोंस माँसपेशियों में भी होते हैं। जब ऐसे माँस को मनुष्य खाता है तो अनेक प्रकार की बीमारियाँ उनको होती हैं।

इसके अलावा दुनिया में एक और महत्व की बात देखी गयी कि माँसाहारी लोगों की तुलना में शाकाहारी लोगों में दया, प्रेम, करूणा, वात्सल्य जैसे गुण उच्च स्थिति में मिलते हैं।

सारी दुनिया में कई जगह अभ्यास किया गया, अध्ययन किये और उनसे पता चला कि शाकाहारी लोगों में ज्यादा मानवीय गुण होते है हम देख रहे हैं कि इस समय दुनिया में एक हिंसा का दौर चला रहा है। और सबसे ज्यादा हिंसा माँसाहारी लोगों के इलाके में देखने को मिल रही है और ये देखा गया है कि माँसाहारी लोगों के इलाके में होने वाली हिंसा जल्दी खत्म नहीं होती। सैकड़ो-सैकड़ों साल वो हिंसा चलती हैं और वो पूरा इलाका हमेशा अशांति में डूबा रहता है।

www.thearyasamaj.org

जो शाकाहारी लोग है, उनके इलाके में गरीबी हो सकती है। परन्तु शांति है।

माँसाहारी लोगों के इलाके में समृद्धि होने के बावजूद अशांति है। दुनिया के जिन देशों में माँस ज्यादा खाया जाता है वहाँ मानसिक रोगी सबसे ज्यादा है।

दुनियाँ में स्वीडन नाम का एक देश है। स्वीडन को दुनिया का सबसे अमीर देश माना जाता है। संयुक्त राष्ट्र की मानवीय विकास रिपोर्ट बताती है कि स्वीडन का स्थान पहले नंबर पर है और भारत का स्थान 136 नंबर पर रहता है।

स्वीडन में भ्रष्ट्राचार नहीं है। वहाँ महामारियाँ नहीं हैं। स्वीडन के चिकित्सकों और वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन किया है कि स्वीडन की सड़कें दुनिया में सबसे अच्छी हैं। ऐसा कहा जाता है कि स्वीडन की सड़के ऐसी हैं जैसे रबड़ की हों। वहाँ गाड़ी ऐसे चलती है जैसे पानी में मछली फिसलती है। परन्तु सबसे ज्यादा पीठ दर्द के मरीज़ अगर हैं तो वो हैं स्वीडन। अगर यह बात भारत देश के लिए कही जाये तो समझ में आती है जहाँ सड़कों पर गड्ढे ही गड्ढे हैं जहाँ सड़के कम और गड्ढे ज्यादा है लेकिन स्वीडन जैसे देश में, जहाँ की सड़के बहुत अच्छी है वहाँ लोगों की पीठ में दर्द क्यों होना चाहिए?

स्वीडन के लोगों का कहना है कि वहाँ के लोगों को साइकोसोमैटिक डिसऔडर (Psychosomatic Disorder) है मनोदैहिक चिकित्सा करने वाले वैज्ञानिकों का कहना है कि ये असंतुलन से पैदा होने वाली बीमारी है इसका सड़कों से कोई लेना देना नहीं है। ये माँसाहारी भोजन, जीवों की हत्या और स्ट्रेस के कारण होने वाली बीमारी है।

स्वीडन शहर की सड़कें

www.thearyasamaj.org

कुतर्क : मांस से प्रोटीन ज्यादा मिलता है।

माँसाहारी लोग अक्सर यह कुतर्क देते हैं कि माँस से प्रोटीन ज्यादा मिलता है। आपको यह जानकर हैरानी होगी की एक किलो माँस में जितना प्रोटीन होती है उससे ज्यादा प्रोटीन एक किलो मूंग की दाल, एक लीटर दूध में होता है।

अगर आपको कैल्शियम (Calcium) और दूसरे सूक्ष्म पोषक तत्व (Micronutrients) चाहिए तो एक किलो माँस खाने से अच्छा है एक लीटर गन्ने, संतरे, मौसंबी, गाजर, टमाटर का रस पी लीजिए। इस सब में माँस से कई गुना अधिक पोषक तत्व होते हैं। हर स्थिति में शाकाहारी भोजन माँसाहारी भोजन से बहुत अच्छा है और कीमत में सस्ता है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की पुस्तक – गोकरूणानिधि

भारत के महान विचारक महर्षि दयानदं सरस्वती जी ने एक बहुत अच्छी पुस्तक लिखी है जिसका नाम है – गोकरूणानिधि। ये पहली पुस्तक थी जिसमे गाय का आर्थिक मूल्यांकन और विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने लिखा है कि एक गाय को काटकर अगर उसका माँस खिलाया जाए तो बहुत थोड़े लोगों को पेट भरा जा सकता है। परन्तु अगर उस गाय को जीवित रखा जाए। उसके दूध-मूत्र आदि का प्रयोग किया जाए तो बहुत सारे लोगों का पेट भरने का रास्ता खुलता है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने जो बात 1870 में लिखी थी वो बात आज 2011 में भी उतनी ही प्रमाणिक है उतनी ही सत्य है।

आप सोचिए! भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध, महर्षि दयानंद, महात्मा गांधी की शिक्षाओं को लेकर हम आगे बढ़ने वाले लोग हैं। हमें तो अब देश और दुनिया के लोगों को तेजी से शाकाहारी बनाने के काम में लग जाना चाहिए। बस एक ही नुकसान है कि माँसाहारी लोग अगर शाकाहारी हो गए तो माँस पैदा करने वालों को कोई दूसरा रोजगार ढूंढना पड़ेगा। दूसरी जगह अपनी प्रतिभा को लगाना पड़ेगा। परन्तु सच मानिए पैसा कमाने के लिए किसी मूक की हत्या करने की आवश्यकता नहीं। हम सभी शाकाहारी बने। दुनिया को शाकाहारी बनने के लिए प्रेरित करें। जानवरों के ऊपर दया करें। उनके ऊपर प्रेम करें क्योंकि हम भारतवासी मानते हैं कि हममें जैसी आत्मा है, वैसी आत्मा जानवरों में भी है। हम एक ही परमपिता ईश्वर की संतान हैं। उनको बचाकर ही हम खुद को बचायेंगे।

धन्यवाद

www.thearyasamaj.org

जंगलों की कटाई

सूखा (पानी की बर्बादी)

प्राकृतिक आपदाएं

प्राकृतिक आपदाएं

प्राकृतिक आपदाएं